B.A. History Hon's Part : II

Paper : III, Unit : V(a), Date : 7. 9. 2020 Lecture No. : 7

Lession: पूर्व मध्यकालीन काल में कला एवं स्थापत्य के विकास

पूर्व मध्यकाल (750 से 1206) में कला, एवं स्थापत्य कला, मूर्तिकला और चित्रकला में काफी प्रगतिशील हुई। स्थापत्य कला में 8वीं शताब्दी के शुरुआत में एक नयी परम्परा भारत के पश्चिमी छोर पर विकसित हुई, जब अरब शासकों ने इमारतों या भवनों का निर्माण कराया। इस्लामी स्थापत्य में मस्जिद और मकबरे का विशेष महत्व है। इस समय की मिसाल सिन्ध में मिलती है। वर्तमान में कराची से लगभग 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित भंबोर में एक मस्जिद सुरक्षित है। मस्जिद का निर्माण 727 में हुआ। इसका आधार इराक में स्थित कूफा नगर की मस्जिद के समान है। भम्बोर के कुछ दूर, और कराची से लगभग 49 किलोमीटर की दूरी पर चौकन्डी का कब्रिस्तान है, जो पूर्व मध्यकालीन सिन्ध के स्थानीय भद्रलोक का कब्रिस्तान है। इसी आधार पर, कुछ नये प्रयोगों के साथ मध्यकालीन हिन्दू-इस्लामी स्थापत्य का विकास हुआ। राजपूत शासकों के अधीन स्थापत्य कला की भव्य प्रगति हुई और मंदिरों का निर्माण की एक नयी और उत्कृष्ट शैली का विकास हुआ। नागर शैली के पूर्व में देवगढ़ के दशावतार मंदिर और भीतरगाँव के मंदिर में देखने को मिलता है।

नागर शैली के उन्नत उदाहरण खजुराहो स्थित मंदिर, आदिनाथ, कांडरिया महादेव, विश्वनाथ, चतुर्भुज तथा पार्श्वनाथ के मंदिर शामिल हैं। इनकी निचली मंजिल का नक्शा सप्त-फलकीय है तथा शिखर गुंबदों आमलक शिलाओं से ढके हैं। इन मंदिरों का निर्माण चंदेल वंश के शासकों के संरक्षण में 950 से 1050 के बीच हुआ। नागर शैली के मंदिरों का दूसरा समूह ओडिशा में पुरी और भुवनेश्वर में स्थित है। कोणार्क के सूर्य मंदिर और पुरी का जगन्नाथ मंदिर है। कोणार्क का मंदिर जो नरसिंह I (1238-64) के शासन काल में निर्मित हुआ। नागर शैली के मंदिरों का तीसरा समूह राजस्थान में पाया जाता है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण दिलवारा और माउन्ट आबु स्थित जैन मंदिर हैं जिनका निर्माण लगभग 12वीं, 13वीं शताब्दी के बीच हुआ। मालवा में 11वीं शताब्दी में निर्मित हैं। इनमें अंबरनाथ (थाणे, महाराष्ट्र) और नीलकंठेश्वर मंदिर (उदयपुर, मध्य प्रदेश) हैं। द्रविड़ शैली के सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण कांचिपुरम का कैलाशनाथ मंदिर है। यह पिरामिड के आकार का है जिसमें हर मंजिल का आकार नीचे की मंजिल से छोटा होता है। चोल कालीन द्राविड़ शैली के दो सर्वोत्कृष्ट उदाहरणों में तंजोर (तंजावुर) स्थित बृहदेश्वर मंदिर और गंगईकोण्डचोलपुरम का मंदिर है। बृहदेश्वर मंदिर राजराजेश्वर मंदिर भी कहलाता है क्योंकि इसे राजराज ने बनवाया था।

दक्कन की बेसर शैली का पूर्वरूप बौद्ध चैत्यों से प्रभावित है और अपने रूप में यह नागर और द्रविड़ शैली की विशिष्टताओं को प्रस्तुत करते हैं। इस शैली को गुजरात के चालुक्य (सोलंकी) शासकों ने विशेष रूप से प्रयोग किया। ऐहोल के ~~मंदिर का निर्माण 7वीं~~ दुर्गा मंदिर और दक्षिण भारत में चिदंबरम् स्थित नटराज मंदिर इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ऐहोल के मंदिर का निर्माण 7वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य हुआ जबकि नटराज मंदिर का निर्माण 10वीं से 13वीं शताब्दी के बीच हुआ। इस काल के मंदिर केवल धार्मिक पूजा-आराधना के केन्द्र नहीं थे बल्कि तत्कालीन सामाजिक और आर्थिक जीवन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी, विशेषकर दक्षिण भारत में। मंदिर शिक्षा के उच्च केन्द्र थे जहाँ धार्मिक विषयों

साथ-साथ व्याकरण और खगोल विद्या की भी शिक्षा दी जाती थी, दक्षिण में इन मंदिरों के पास भू-अनुदानों के माध्यम से वृहद् अचल संपत्ति थी। मंदिरों द्वारा लोगों को रोजगार भी मिलता था। ~~मंज~~ तंजौर मंदिर में 1011 के एक अभिलेख से जानकारी मिलती है उस मंदिर में 600 लोग जुड़े थे जिनमें पुजारियों के अतिरिक्त मालाकार, माली, संगीतकार, वादक और देवदासियाँ तथा सेवक शामिल थे। देवदासियों की दक्षिण भारत में महत्वपूर्ण भूमिका थी। वह देवता की पूजा-अर्चना में नृत्य किया करती थी। लेकिन परवर्ती काल में इन स्त्रियों में गिरावट आयी और देवदासियों की स्थिति वेश्याओं के समान हो गई।

मूर्तिकला : मूर्ति-कला के नमूने भी पूर्वमध्यकाल में देखने को मिलता है, इस काल में मंदिरों के दिवारों को सजाने के लिए उनपर मूर्तियाँ बनाते थे। बड़ी-बड़ी खम्भों की सजावट में भी मूर्तियों का प्रयोग हुआ है। द्रुती और पृथक मूर्तियाँ भी जिसमें पत्थर की मूर्तियों के साथ-साथ धातु कांस्य प्रतिमाओं का भी निर्माण हुआ। गुप्तकालीन मूर्ति कला का प्रभाव पूर्व मध्यकाल में मिलता है। यह क्षेत्रीय रूप कश्मीर, पश्चिम भारत, गंगा घाटी, पूर्वी भारत, मध्यभारत, दक्कन और दक्षिण भारत तक फैले है किन्तु पूर्वी भारत के पाल शासकों, दक्कन के चालुक्य एवं राष्ट्रकूट शासकों और दक्षिण के चोल शासकों के अधीन विकसित शैलियों को प्राप्त है। बौद्ध लामा तारानाथ, पाल काल में विख्यात मूर्तिकारों धीमन और विटपाल की चर्चा करता है। पालकालीन कांस्य-प्रतिमाएँ साँचे में ढालकर बनायी गई थी। जिनमें बौद्ध धर्म और वैष्णव मत की प्रधानता है। इनके सुन्दर नमूने नालन्दा और कुर्किहार से प्राप्त हुए है। इनमें शिव को नृत्य की मुद्रा में दर्शाया है। दक्कन में इस काल में महाबलिपुरम, एलोरा और एलिफैन्टा के मंदिरों में मूर्तिकला के महत्वपूर्ण उदाहरण मिलते है। महाबलिपुरम में शिलाओं को काटकर बनी हुई मूर्तियाँ अपनी प्राकृतिक छटा के लिए प्रसिद्ध है, एलोरा की मूर्तियाँ धार्मिक विषयों की सजीव प्रस्तुति के लिए प्रशंसनीय है और एलिफैन्टा की गुफाओं में नक्काशी के सुन्दर नमूने शिव के शिवलिंग भी मशहूर है।

चित्रकला : पूर्व मध्यकाल में 10वीं और 11वीं शताब्दियों में चित्रकला के उत्कृष्ट प्रमाण दिवारों पर बने चित्रों और पाण्डुलिपियों में देखे जा सकते है। दक्कन में एलोरा के गुफा-मंदिरों में दिवार और छत पर बने चित्र आकर्षक और सजीव है। इनका विषय जैन और ब्राह्मण धर्म दोनों से ही है। यह चित्र कैलाश, इन्द्रसभा, गणेश लेण्ड और आनन्दाकार स्थानों में बने है। इन मंदिरों में मुख्य है। दक्षिण भारत में भी विजयालय चोलेश्वर मंदिर और दशावतार मंदिर में चित्रकला के नमूने देखने को मिलता है। बृहदेश्वर मंदिर की दीवारों पर भी चित्रकला की विशेषताएँ प्रशंसनीय संदेश जा सकता है इन सब में चोलकालीन शैली की विशेषताएँ।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर